© 2015 IJSRSET | Volume 1 | Issue 1 | Print ISSN: 2395-1990 | Online ISSN : 2394-4099
International Journal of Scientific Research in Science, Engineering and Technology

शोध-प्रविधि-स्वरूप

डॉ शशी सिंह

एसोसिएट प्रोफेसर हिंदी विभाग, महाराजा अग्रसेन कॉलेज(दिल्ली विश्वविद्यालय)

सारांश

प्रारंभिक काल से ही जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में नित नए व नूतन आविष्कार व अनुसंधान होते रहे हैं। जिसके परिणामस्वरूप हम आज विकसित आधुनिक दौड़ में प्रवेश कर चुके है। आदि मानव से लेकर आधुनिक मानव जीवन शैली में न जाने कितने शोध हुए होंगे। आदि मानव ने कभी तो भाषा सीखी होगी, कैसी सीखी, कैसे अपने अंदर समाहित किया कैसे व्याकरण बनी यह सब भी अनवरत शोध का ही परिणाम है जैसे मानव ने पहले जो आवास की व्यवस्था की होगी ऐसी तो नहीं थी जैसी आज है। उस समय जंगली जानवरों का हाहाकार तथा प्राकृतिक आपदाओं से भी बचने का कोई रास्ता नहीं था। उदाहरणतः जानवरों से बचने के लिए ही सही परंतु नयी आवास का प्रबंध पेड़ की लकड़ी से झोपड़ी जैसी जगह बनाने के लिए किया होगा ताकि वह अपने प्राणों की रक्षा कर सके। तदुपरांत खाना खाने के लिए बहुत जद्दोजहद करनी पड़ी होगी। फिर इसी प्रकार से पहले नदी पोखर का जल, कुएँ का जल, हैंडपंप का जल यह सब भी उसकी खोज के ही परिणाम रहे हैं। वस्त्रों के लिए पेड़ के पत्तों की छाल का प्रयोग किया होगा अर्थात् तब रोटी, कपड़ा, मकान जैसी मूल आवश्यकताओं की पूर्ति हुई होगी। अन्य सभी विकास बाद में सम्मिलित हुए होंगे। ऐसा माना जाता है कि एक झोपड़ी में आग लगी उसमें मिट्टी के बर्तन थे वह आग बुझने पर पक्के बर्तनों में परिवर्तित हो चुके थे तभी से मिट्टी के बर्तनों का प्रचलन आरंभ हो गया।

मानव चूँकि सृष्टि का सर्वाधिक ज्ञानवान प्राणी है इसलिए उसने अपने ज्ञान चक्षुओं और बुद्धि का प्रयोग करते हुए सभी क्षेत्रों में शोध करते हुए निर्माण की नई राह निर्मित की। प्रकृति को देखकर उसके रंगों की खोज की। मिट्टी के बर्तनों के बाद धीरे-धीरे ईंटों का भी निर्माण किया होगा। ये सभी आविष्कार अनायास ही हो गए होंगे। बाद में प्रयास सम्मिलित हुआ। प्रयत्नपूर्वक यत्न से आज वह शोध के माध्यम से कहाँ का कहाँ पहुँच चुका है।

एक छोटा-सा उदाहरण लें कि दो व्यक्ति की लड़ाई में जब हम परेशान हो जाते है और वह हमें दुःख पहुँचाता है तो हम अकेले में बैठकर उस विषय पर मनन करते-करते शोध प्रक्रिया को अपनाते हैं। उसने मुझे ऐसा क्यों कहा मैंने उसे कुछ नहीं कहा था, मैंने उसका इतना काम किया फिर भी उसने मेरा मन दुखाया। अब मैं उससे बात नहीं करूँगा या करूँगी। फिर अचानक ही हम संभलकर अपने आप को उस मोड़ पर पाते है। मनन करते-करते कि मैं आगे से उससे बात नहीं करूँगा या फिर उससे इस प्रकार से बदला लूँगा या लूँगी।

कहने का तात्पर्य है कि जन्मजात मानव शोधी प्रकृति का है फिर वह चाहे छोटा विषय हो या बड़ा। इसी प्रकार के परिणामस्वरूप सरकंडे की कलम, पैन, होल्डर के बाद वालपैन कम्प्यूटर मोबाइल और तमाम तरह की वस्तु मौजूद है। इस शोध के इसी लेख में मैंने शोध स्वरूप पर प्रकाश डाला है।

प्रस्तावना

शोध प्रविधि - स्वरूप परिचय

शोध सतत निरंतर प्रक्रिया है। शोध शब्द शुद्धि**,** संस्कार तथा संशोधन का अर्थ देता है। शोध विषय की गहराई में जाकर उसके रहस्य का उद्घाटन करता है। शोध का फलक दायरा विस्तृत ही नहीं असीमित है। शोध अज्ञान के क्षेत्रों को लुप्त कर श्रेष्ठ परिणाम प्रदान करते है तथा नई ज्ञान की ज्योति प्रज्वलित करता है। हमारी सांस्कृतिक उन्नति का रहस्य भी शोध में निहित है।

भाषा का जन्म भी शोध का ही परिणाम था। यादृच्छिक ध्वनि प्रतीकों की वह व्यवस्था जिसका उच्चारण आपसी विचार विनिमय के लिए किया जाता है। हम भाषा की इस परिभाषा पर एक निश्चित शोध के परिणामस्वरूप ही पहुँचे हैं। यादृच्छिक अर्थात् इच्छा से माना हुआ जब कहा जाता है तो इसका तात्पर्य ही है कि मानव जाति के विकास की यात्रा में किसी निष्कर्ष पर पहुँच कर इसे यह नाम दिया गया। यानि हमने भाषा को नहीं बनाया अपितु उसके शब्दों में जो अर्थ है वह इच्छा से माना हुआ है। ऐसा नहीं है कि हर तरल पदार्थ पानी ही होता है। समान रूप से चार गिलास में तरल पदार्थ भिन्न-भिन्न प्रकार के रख दिए जाए तो सभी का उच्चारण पानी नहीं होगा। यह शोध का परिणाम है कि हमने जिसे पानी नाम दिया वह ऐसे तरल पदार्थ का नाम है जो शीशे जैसा पारदर्शी होता है परंतु जूस तरल पदार्थ को पानी नहीं कहा जा सकता। इसी प्रकार दूध से भरा गिलास**,** शराब से भरा गिलास भी पानी नहीं कहलाता है। पानी**,** जूस**,** शराब**,** या लस्सी तथा अन्य कुछ। ये सभी हमारी गूढ़ अध्ययन परंपरा से निकलकर किसी शब्द के रूप में उस अर्थ में प्रचलित हो गए। इन्हें निर्माण करने वाली ध्वनियों में भी उनका यह अर्थ नहीं है। यह शोध के द्वारा ही सिद्ध हुआ कि हमने मान लिया कि अमुक पदार्थ को हम पानी कहेंगे तो अमुक को जूस।

आग लगकर घड़े का पक जाना भी शोध का ही परिणाम था। हमने मिट्टी के घड़े का शोधन कर उसे आग में पकाकर किसी निश्चित मुकाम पर पहुँचाया। यही नवीनीकरण है यह नवीनीकरण ज्ञान है और ज्ञान की सीमा का विस्तार शोध है।

शोध से अभिप्राय-स्वरूप एवं विशेषताएँ

शोध के विभिन्न पर्याय है - गवेषणा**,** अनुसंधान**,** खोज**,** अन्वेषण**,** मीमांसा**,** अनुशीलन**,** परिशीलन**,** आलोचना**,** रिसर्च। आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी (सन् **1969)** स्थूल अर्थों में नवीन और विस्तृत तत्त्वों के अनुसन्धान को शोध कहते हैं सूक्ष्म अर्थों में ज्ञात साहित्य के पुर्नमूल्यांकन और नई व्याख्याओं का सूचक मानते हैं।

पी.वी. यंग (सन् **1966)** के अनुसार नवीन तथ्यों की खोज**,** प्राचीन तथ्यों की पुष्टि**,** तथ्यों की क्रमबद्धता**,** पारस्परिक विधि को शोध करते है।

जिज्ञासा अनुसंधान का मूल आधार है। जिज्ञासा की तृप्ति के लिए हम अनुसंधान में संलग्न होते हैं और रहस्य की खोज कर पाते है।

तुलसीदास जी कहते हैं कि -

सबसे भले वे मूढ़
जिन्हहि न व्यापह जगत गति।

शक्ति व्यंजना का प्रयोग है।

कहने का तात्पर्य है कि वे अज्ञानी सबसे ज्यादा भले है क्योंकि सांसारिक जगत की गति उन्हें संपृक्त नहीं करती है। अर्थात् ज्ञान ही शोध का मूलभूत आधार है।

अंग्रेजी में इसे रिसर्च Re+Search कहा जाता है। रि = आवृत्ति और गहनता। सर्च = खोज।

प्रदत्त तथ्यों से नए सिद्धांतों की खोज करना निष्कर्ष पर पहुँचना ही रिसर्च है। पुनः पुनः सर्च, खोज करना। खोज की खोज करना यह रहस्य है। विकास का मूल शोध है। शोध का आरंभ ही है अंत नहीं। शोध नदी है तालाब नहीं। उसमें परिवर्तन की क्षमता है। शोध संस्कार उन बौद्धिक व मानसिक गुणों का समुच्चय है जो शोध प्रेरक होते है।

''अनुसंधान नवीन ज्ञान प्राप्त करने के लिए एक व्यवस्थित प्रयास है।''[1]

अनुसंधान से नए सत्य की खोज की जाती है। पुराने को नए ढंग से प्रस्तुत करना भी अनुसंधान ही कहलाता है।

नए संबंधों का स्पष्टीकरण करते हुए पुराने नियमों की युगानुरूप नवीनता भी अनुसंधान में ही दी जाती है। अनुसंधान में नए सिरे से तथ्यों व प्रदत्तों का स्पष्टीकरण किया जाता है।

नए अंतसंबंधों का विश्लेषण करते हुए विशिष्ट समस्याओं का समाधान प्राप्त कर निष्कर्षों की स्थापना की जाती है।

डॉ. एम. वर्मा के अनुसार - ''अनुसंधान एक बौद्धिक प्रक्रिया है जो नये ज्ञान को प्रकाश में लाती है अथवा पुरानी त्रुटियों एवं भ्रांत धारणाओं का परिमार्जन करती है तथा व्यवस्थित रूप में वर्तमान ज्ञान-कोष में वृद्धि करती है।'' इसलिए अपनी प्रकृति में अनुसंधान बौद्धिक प्रक्रिया है। इसे तर्कपूर्ण, वस्तुनिष्ठ (पक्षपात से मुक्त) प्रक्रिया भी कहा जाता है।

पी.एम. कुक के अनुसार- ''किसी समस्या के संदर्भ में ईमानदारी, विस्तार तथा बुद्धिमानी से तथ्यों, उनके अर्थ तथा उपयोगिता की खोज करना ही अनुसंधान है।''[2]

गोविन्द त्रिगुणायत (1960) के अनुसार अंग्रेजी रिसर्च में समाहित खोज (Search), पूछताछ (Enquiry), छानबीन (Investigation), परीक्षण (Examination) और निर्णय (ascertaining), इनके अतिरिक्त व्याख्या और गूढ़ चिन्तन को भी 'अनुसंधान' शब्द अभिव्यक्त करता है।

आज तक जीवन के विविध क्षेत्रों में जो भी प्रगति हुई है उन सबका आधार शोध अथवा अनुसंधान है। इसलिए Best John, W. (1959) के अनुसार ''हमारी सांस्कृतिक उन्नति का रहस्य शोध में निहित है। शोध नये सत्यों के अन्वेषण द्वारा अज्ञान के क्षेत्रों को लुप्त कर देता है और वे सत्य हमें कार्य करने की उत्कृष्टतर विधियाँ और श्रेष्ठ परिणाम प्रदान करते है।''

सी.सी. क्राफोर्ड के अनुसार - ''अनुसंधान किसी समस्या के अच्छे समाधान के लिए क्रमबद्ध तथा विशुद्ध चिन्तन एवं विशिष्ट उपकरणों के प्रयोग की एक विधि है।''[3]

सामाजिक विज्ञानों के ज्ञान-कोष के अनुसार - ''अनुसंधान वस्तुओं, प्रत्ययों तथा संकेतों आदि को कुशलतापूर्वक व्यवस्थित करता है, जिसका उद्देश्य सामान्यीकरण द्वारा विज्ञान का विकास परिमार्जन अथवा सत्यापन होता है, चाहे वह ज्ञान व्यवहार में सहायक हो अथवा कला में।''[4]

लेखिका जोरा नियले हर्स्टन के कथनानुसार - ''शोध जिज्ञासा का औपचारिक रूप है। यह किसी प्रयोजन से, बहुत गहरे पैठकर (कुरेद-कुरेदकर) जानकारी हासिल करता है। (हर्स्टन 1942)''

शोध औपचारिक रूप से व्यवस्थाबद्ध तरीके से उसकी तमाम प्रक्रियाओं की माँग करता है जिज्ञासा उसी का अहम् भाग है।

एम.एस. ट्रेवर्स के अनुसार - ''शैक्षिक अनुसंधान वह प्रक्रिया है जो शैक्षिक परिस्थितियों में एक व्यवहार सम्बन्धी विज्ञान के विकास की ओर अग्रसर होती है।''[5]

ऑक्सफ़ोर्ड अंग्रेजी शब्दकोश (2007) के अनुसार - ''शोध उपयुक्त सामग्री एवं स्त्रोतों के द्वारा तथ्यों को स्थापित करने

और नए निष्कर्षों तक पहुँचने का माध्यम है।''

डब्ल्यू.एस. मनरो के अनुसार - ''अनुसंधान उन समस्याओं के अध्ययन की एक विधि है जिसका अपूर्ण अथवा पूर्ण समाधान तथ्यों के आधार पर ढूँढ़ना है। अनुसंधान के लिए तथ्य, लोगों के मतों के कथन, ऐतिहासिक तथ्य, लेख अथवा अभिलेख, परखों से प्राप्त फल, प्रश्नावली के उत्तर अथवा प्रयोगों से प्राप्त सामग्री हो सकती है।''[6]

उपर्युक्त परिभाषाओं से शोध तथा अनुसंधान की प्रकृति स्पष्ट हो जाती है कि अनुसंधान वह प्रक्रिया है जिसमें नए तथ्यों की खोज करते हुए ज्ञान-भण्डार में वृद्धि व विकास किया जाता हैं।

इस अवलोकन से स्पष्ट होता है कि -

1. अनुसंधान बौद्धिक प्रक्रिया है।
2. अनुसंधान तर्कपूर्ण वस्तुनिष्ठ प्रक्रिया है जो पक्षपात से मुक्त होती है।
3. अनुसंधान के द्वारा नए तथ्य, सिद्धांतों तथा विधि एवं वस्तु की खोज की जाती है।
4. विविध प्राप्त आँकड़ों से नए ज्ञान को प्राप्त किया जाता है या पहुँचा जाता है।
5. नए सत्य की खोज के लिए पुराने को नए तरीके से प्रस्तुत किया जाता है।
6. पुराने नियमों को युगानुरूप नवीनता प्रदान की जाती है।
7. नए सिरे से सिद्धान्तों/विधियों का स्पष्टीकरण किया जाता है।
8. नए अंर्तसंबंधों का विश्लेषण किया जाता है।
9. इन सभी के लिए सुव्यवस्थित प्रयास किए जाते है।
10. सभी क्षेत्रों में अनुसंधान के महत्त्व की खोज की जाती है जैसे विज्ञान, गणित, इतिहास, राजनीति आदि।
11. प्राप्त ज्ञान का सत्यापन कर प्रतिष्ठा की जाती है।
12. सभी निरीक्षण वस्तुनिष्ठ एवं नियंत्रित होते हैं।
13. ज्ञान का प्रसार सुव्यवस्थित तरीके से किया जाता है।
14. विश्लेषण में गणितीय (सांख्यिकीय) विधियों का प्रयोग महत्त्वपूर्ण है।
15. जटिलता होने पर विश्लेषण पद्धति का प्रयोग उपयोगी होता है।
16. विशिष्ट समस्याओं का समाधान करते हुए निष्कर्षों की स्थापना की जाती है।

कुल मिलाकर अनुसंधान का स्वरूप अत्यंत व्यापक है। जिसका फलक विराटतम होते हुए भी अपनी सीमाओं को समेट लेता है तथा निश्चित रूपरेखा के तहत कार्य करता है।

शोध या रिसर्च के माध्यम से हम उस गुह्यतम रहस्य को जानने व अनावरत रूप से प्रकट करने में सक्षम हो पाते हैं और जिज्ञासाओं की खोज कर पाने में सक्षम हो पाते हैं।

शोध कार्य करने में एक तर्क व लय होता है जिसे समझने के लिए आत्म-विश्वास और क्षमता की आवश्यकता होती है। शोध परियोजना को आरंभ करने के लिए हमें तमाम प्रक्रियाओं से जूझना पड़ता है जैसे - विषय खोजना, प्रश्न तैयार करना, सुविचारित तरीके से कार्य प्रारंभ करना, विधिवत पद्धति का अनुसरण करते हुए रूपरेखा निर्माण करना, सुसंगत प्रस्ताव के साथ आगे बढ़ना, डेटा सामग्री एकत्र करना, विवेचन व विश्लेषण करना, श्रेणीबद्ध करना, निश्चित अवधि में समाप्त करना, व्यवस्थाबद्ध तरीके से कार्य पूर्ण करना। निर्देशक के साथ मिलकर सुचारू रूप से कार्य को किसी निष्कर्ष तक पहुँचाना। यह तमाम प्रक्रिया अपनाते हुए शोधार्थी या अनुसंधानकर्ता अपने सभी प्रकार के अनुसंधानों या शोधों को तर्कों व सिद्धान्तों के साथ स्थापित करते हैं। इसके लिए

अत्यधिक गहन, मनन और अध्ययन की आवश्यकता होती है जो एक निश्चित अवधि के तहत कार्य को प्रगति देते हुए किसी विशिष्ट निर्देशों व निष्कर्षों की स्थापना करते हैं। सभी शोधार्थियों को इस प्रक्रिया से गुजरना अनिवार्य है।

शोध खास मुद्दों और समस्याओं को भलीभाँति समझने में, उसका व्यवहारिक समाधान पाने में दूरदृष्टि के साथ संभावनाओं को तलाशता है। समाधानोन्मुख कार्य कर सफलता मूल्यांकन में उपयोगी सिद्ध होता है।

शोध डेटा इक्ट्ठा करने की प्रक्रिया है जिसके माध्यम से नए समाधान खोजे जा सकते हैं। शोध नई संभावनाओं को तलाश कर, खोज का विस्तार करते हुए हमें आगे बढ़ने के लिए प्रेरित करता है। निस्संदेह शोध एक सशक्त साधन है।

हिन्दी में शोध का प्रारंभ

जीवन में प्रगति का रहस्य शोध व अनुसंधान में निहित है। सृष्टि के प्रारंभ में चिंतन गूढ़ नहीं था, बोधपूर्वक प्रयत्न के कारण मानव तथ्यों एवं सत्य का अन्वेषी बन गया। जो हमारी ऐतिहासिक उन्नति का कारण बना। मानव द्वारा किया गया सूक्ष्म अवलोकन, तथ्य विश्लेषण, नीर क्षीर विवेक निर्णय शक्ति, विश्लेषण आधारित निष्कर्ष में अपार संभावनाएँ निहित रही है। इन्हीं के आधार पर शोध द्वारा विभिन्न रहस्यों की खोज कर पाया है। मानव सभ्यता को यदि शोध वृत्ति या अनुसंधान प्रवृत्ति कहा जाए तो अतिशयोक्ति नहीं होगी। परिणामस्वरूप अनुसंधान योजनानुसार, वैज्ञानिक विश्लेषण दृष्टियुक्त प्रमुख रहा।

पीढ़ी-दर-पीढ़ी संकलित व संचित ज्ञान ने आगामी पीढ़ियों के कार्य को अधिक सुगम व तेज बनाया। आधुनिक युग में सुई से लेकर एटम बम तथा कम्प्यूटर, मोबाईल, अन्तरिक्ष, स्पेस यात्रा, मंगल ग्रह यात्रा तक विकास तीव्रतर होता गया है।

दिनोंदिन नई-नई तकनीकों व वस्तुओं का तीव्रता से विकास हो रहा है जिसने मानव की दुनिया ही बदल दी है। सभी क्षेत्रों में जैसे अर्थशास्त्र, समाजशास्त्र, भाषा-विज्ञान, राजनीति विज्ञान, भूगोल, तर्कशास्त्र, दर्शनशास्त्र, सृजन, कलात्मक इत्यादि में पुराने सिद्धांतों के समतुल्य नए सिद्धांतों की स्थापना की जा रही है। अनुसंधान मानव जीवन का अनिवार्य अंग है। शोध ने जीवन की दिशा बदल दी है। नई राहों का अन्वेषण करते हुए सूक्ष्म बिन्दुओं पर निष्कर्ष स्थापित किए हैं।

प्रारम्भिक शोध आकस्मिक थे जैसे जब मानव को आग जलाना आया तो किसी दिन जलती हुई आग में कोई मिट्टी का बर्तन पक गया होगा। गोल लकड़ी/काष्ठ के लुढ़कने से पहिए का आविष्कार हुआ होगा। पहिए से गाड़ी और आज तक की तमाम गाड़ियों की यात्रा इसी प्रकार विकसित हुई। कपास से रस्सी, रेशम व रूई से वस्त्र बुनने तक की प्रक्रिया तथा कुटिया से मकान बनाने तक की यात्रा इसी तरह के पड़ावों को पार करते हुए आगे बढ़ती गई। परिणामतः आज के वैज्ञानिक युग में हम जी रहे है। इस प्रकार अनुसंधान की प्रक्रिया अधिक तीव्र होती गई है।

वर्तमान अनुसंधान विशिष्ट उद्देश्यों की सिद्धि व पूर्ति के लिए किए जाते हैं। जिसकी निश्चित दिशाएँ होती है। भाषा भी इसी का परिणाम है। आज अणु-आयुधों से लेकर तमाम छोटे-छोटे पैन तक के आविष्कार; नाद के माध्यम से संगीत का सृजन भी अनुसंधान का ही परिणाम है। हर दिशा अनुसंधान की प्रेरणा है। बाह्य और आंतरिक जगत का ज्ञान अनुसंधान की आवश्यकता है।

प्रारंभ से ही भारत में शिक्षा का उद्देश्य ज्ञान प्राप्ति कर नए क्षेत्रों का विकास रहा है। इसलिए शोध का प्रारंभ मानव जाति के प्रारंभ के साथ ही हो गया था। हर वस्तु का आविष्कार नए शोध की दिशा निर्धारित करता है। ज्यों-ज्यों सभ्यता संस्कृति का विकास होता गया है। शोध के नए आयाम जुड़ गए है। समयानुसार आवश्यकताएँ परिवर्तित हुई तो शोध के क्षेत्रों में भी असीम संभावनाओं ने जन्म लिया चाहे वह हिन्दी भाषा हो या अन्य भारतीय भाषाएँ (जैसे आसामी, उड़िया, बंगाली, गुजराती, मराठी, राजस्थानी, पूर्वी, पश्चिमी, कन्नौजी, अवधी, बघेली, छत्तीसगढ़ी, भोजपुरी, मगही, मैथिली आदि)।

इसी प्रकार शोध के लिए भारतीय क्षेत्र रहा हो या अन्य भाषाई क्षेत्र। सभी का अपना एक विशिष्ट योगदान रहा है। इसी

प्रक्रिया में पूरे विश्व में शोध स्थान का अनुसंधान क्षेत्र खुलते गए। पहले गुरुकुल में शिक्षा प्राप्त किया करते थे तब उसका प्रयोग युद्ध क्षेत्र में या राज्य स्तर पर प्रजापालन में किया करते थे। ज्यों-ज्यों भारत की शिक्षा प्रणाली बदली, तो नए क्षेत्रों का विकास तदनुसार स्कूल, कॉलेज, संस्थान, तकनीकी संस्थानों ने बहुतायत से भारतीय स्तर पर राष्ट्रीयता की दृष्टि से अपना एक विशिष्ट स्थान बनाया। हिन्दी में भी असीम संभावनाओं ने जन्म लिया। असीमित विषयों में शोध के साथ हिन्दी ने वैश्विक स्तर पर भी अपना दायरा फैलाया।

आज हिन्दी में आदिकाल से लेकर आधुनिक काल तक के विभिन्न विषयों पर शोध के असीमित क्षेत्र है जिन पर शोध कार्य हो रहा है, हो चुका है और होता रहेगा। इनके अतिरिक्त अन्य भाषाओं में भी यही स्थिति है। विषय इतिहास, तकनीक, राजनीति, गणित, विज्ञान, सांख्यिकी, दर्शन, संगीत, रसायन, कहीं से भी, किसी भी प्रकार का हो सकता है। जिस पर कार्य करने की अपनी एक प्रक्रिया है। सर्वप्रथम शोध विषय का चयन फिर विश्वविद्यालय द्वारा स्वीकृति, साक्षात्कार की प्रक्रिया द्वारा निर्देशक की स्वीकृति तथा अनुमोदन मुख्य हैं

शोध कार्य संबंधित विषय और निर्देशक स्वीकृत होने के उपरांत कार्य किस प्रकार का हो यह निर्धारित किया जाता है यह शोधार्थी पर निर्भर करता है कि वह किस प्रकार के शोध कार्य का चयन करता है। मेज कार्य या क्षेत्र कार्य दो प्रकार के कार्यों का विकल्प मौजूद रहता है।

आवश्यकतानुसार शोधार्थी शोध कार्य चुनकर उस पर कार्य प्रारंभ कर शोध को आगे बढ़ाता है।

आधुनिक समय में हिन्दी में ही कम्प्यूटर पर कार्य करना तथा मोबाईल पर कार्य करना ऐसी प्रक्रिया बन गई है। जिसके तहत शोधकार्य - रोजगारोन्मुख प्रधान हो गया है। यह आवश्यक नहीं कि सभी को रोजगार प्राप्ति हो जाए। तथापि कोशिश की जाती है कि शोधार्थी शोध कार्य को हर संभव स्तर पर आगे बढ़ा सके। बहुत कम शोधकर्ता होते है जो आदर्श शोधकार्य कर पाते है। विभिन्न बाधाओं के बावजूद शोधकार्य में संकलित डेटा/सामग्री की विश्वनीयता और परिणाम की पराकाष्ठा प्रमाणित हो नहीं पाती है। चुनौतियों को तय करते हुए ईमानदारी व निष्ठा से अपना कार्य करते हुए हिन्दी शोधार्थी अपना कार्य आगे बढ़ाने में सफल हो रहे हैं। प्रत्येक चरण को पार कर शोधकर्ता अपने कार्य को सुनिश्चित परिणाम तक पहुँचाता है। अपने शोधकार्य तथा अध्ययन को औचित्यपूर्ण निष्कर्ष द्वारा स्थापित करता है।

आज भारत में आधुनिक शोध प्रणाली पर शोध कार्य हो रहा है। स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद इसमें तीव्रता आई। लार्ड कर्जन ने पुरातत्त्व सामग्री के संरक्षण हेतु कानून बनाकर संस्कृति पुनरुद्धार में महत्त्वपूर्ण कार्य किया। सर विलियम जोन्स ने रॉयल एशियाटिक सोसाइटी की स्थापना की। इन्होंने शोध जनरल के माध्यम से भाषा, साहित्य, पुरातत्त्व और इतिहास पर शोधकार्य किया। इन्होंने यूरोप में संस्कृत की ओर वहाँ के लैटिन की तुलना में उसे श्रेष्ठ बताया। इनसे पूर्व सन् **1588** में फ्लोरेंस के फिलिप्पो सारसेट्टी ने संस्कृत, ईरानी, ग्रीक, लैटिन में समानता की चर्चा की। इसी कारण आज भाषा वैज्ञानिक इस निष्कर्ष पर पहुँचे है कि इन सभी भाषाओं का कोई एक मूल स्त्रोत अवश्य रहा हैं।

महाभारत तथा रामचरितमानस का रूसी में रूपांतर रूस के विद्वान बारानिकोव्ह ने किया है। इनका शोधपरक चिन्तन महत्त्वपूर्ण है।

जर्मन के संस्कृत विद्वान विन्टरनित्स ने भारतीय साहित्य का इतिहास लिखा जो उनकी शोध भावना को उजागर करता है हिन्दी विद्वानों के लिए यह संदर्भ ग्रंथ बन गया हैं।

मैक्समूलर (ब्रिटेन) ने **1849** से **1874** तक **25** सालों में ऋग्वेद का प्रामाणिक संस्करण तैयार किया। कनिंघम ने पुरातत्त्व पर महत्त्वपूर्ण कार्य किया। हड़प्पा और मोहनजोदड़ों के उत्खनन से नई सभ्यता प्रकाश में आई, शोधकार्य होना बाकी है।

जार्ज ग्रियर्सन के गुरु जे. एटकिन्सन्स इतने मर्मज्ञ और मेधावी थे कि पाणिनी की अष्टाध्यायी उन्हें कंठस्थ थी (संस्कृत का उच्चारण वे भारतीय पंडित व विद्वान जैसा ही करते थे तथा व्याकरण फ्रेंच, लैटिन, अंग्रेजी, रूसी, चीनी, हिन्दी, तमिल, तेलुगू आदि

भाषाओं के ज्ञाता थे। शोध-कार्य में तत्पर रहना इनका स्वभाव था। इसी प्रकार ग्रियर्सन भी कई भाषाओं के विद्वान थे, पर हिन्दी के प्रति विशेष प्रेम था जिसके कारण इन्होंने - 'द मार्डन वर्नाक्यूलर लिटरेचर ऑफ़ हिन्दुस्तान' लिखा। इनका इतिहास सर्वप्रथम 'द जर्नल ऑफ़ द रॉयल एशियाटिक सोसाइटी ऑफ़ बंगाल' भाग (**1) 1888** के विशेषांक रूप में छपा था। जिसका हिन्दी रूपान्तर किशोरीलाल गुप्त ने 'हिन्दी साहित्य का प्रथम इतिहास' शीर्षक से प्रकाशित कराया।

इनके उपरांत मिश्रबन्धुओं ने भी मिश्रबन्धु विनोद के नाम से हिन्दी साहित्य का इतिहास लिखा। ठाकुर शिवसिंह सेंगर ने **1883** में कवियों का एक वृत्त संग्रह प्रकाशित किया। उसके बाद सन् **1889** से सर ग्रियर्सन ने 'मॉर्डन वर्नाक्यूलर लिटरेचर ऑफ़ नार्दन हिन्दुस्तान' के नाम से वैसा ही बड़ा कवि-वृत्त संग्रह निकाला।

मिश्रबंधुओं ने 'कवि-वृत्त-संग्रह' 'मिश्रबंधु विनोद' जिसमें वर्तमान काल के लेखकों और कवियों का भी समावेश तीन भागों में प्रकाशित किया। 'हिन्दी साहित्य का इतिहास, भूमिका' मिश्रबन्धुओं का विनोद में जो सामग्री एकत्र की गई है उसके बाद ही आचार्य आलोचक रामचन्द्र शुक्ल ने हिन्दी साहित्य का इतिहास 'हिन्दी शब्द सागर' की भूमिका रूप में प्रस्तुत होने के बाद पुस्तक रूप में प्रकाशित हुआ। शुक्ल जी ने पाश्चात्य साहित्य इतिहास लेखन की विधेयवादी शैली को अपनाकर हिन्दी इतिहास लेखन को नई दिशा प्रदान की।

आचार्य शुक्ल के अनुकरण पर डॉ. रामशंकर शुक्ल ने इतिहास लिखा है। आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी का हिन्दी साहित्य का इतिहास छात्रों को दृष्टि में रखकर लिखा गया है। इसलिए उसमें ध्यान रखा गया है कि मुख्य प्रवृत्तियों का विवेचन टूटने न पाए और विधायी शोधकार्यों के अद्यतन परिणामों से अपरिचित न रह जाएँ।

डॉ. रसाल के इतिहास के पश्चात् डा. रामकुमार वर्मा का मध्यकालीन हिन्दी साहित्य का इतिहास शोध-उपाधि की कृति है जिसमें पूर्ववर्ती इतिहासों के गुण-दोषों के साथ ही नए तथ्य भी सम्मिलित किए गए है।

हिन्दी में छात्रोपयोगी अनेकों इतिहासों का प्रकाशन हो रहा है उल्लेखय् - नागरी प्रचारिणी सभा वाराणसी के भारतीय हिन्दी परिषद् प्रयाग द्वारा प्रकाशित 'हिन्दी साहित्य का इतिहास' के तीन भाग तथा डा. गणपतिचन्द्र गुप्त का हिन्दी साहित्य का वैज्ञानिक इतिहास।

विदेशों में भी हिन्दी भाषा साहित्य तथा व्याकरण पर काफी शोधकार्य हुआ है। आज शोधार्थी के समक्ष अनेकों संभावनाएँ है वे भारतीय भाषाओं और विदेशी भाषाओं की समान प्रवृत्तियों का ऐतिहासिक तथा तुलनात्मक विवेचन किया जा सकता है।

विषय का चुनाव होने पर प्रकाशित अप्रकाशित सामग्री का मनोयोगपूर्वक अध्ययन करना चाहिए। इसी से उसकी रूपरेखा और परिकल्पना बनती है।

निष्कर्ष

शोध प्रक्रिया एक अनुसंधान चक्र है।

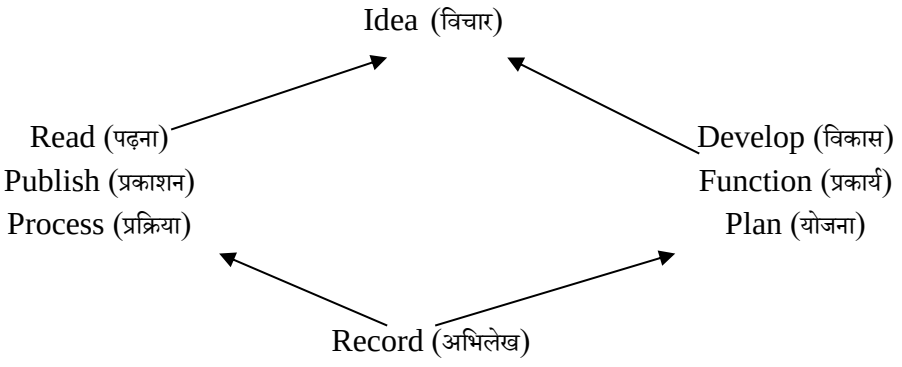

अनुसंधान चक्र एक प्रक्रिया है जो प्रक्रिया, प्रकाशन, पढ़ना, योजना, प्रकार्य द्वारा विकसित होती है।

जीवन के बाह्य तथा आंतरिक पक्ष अनुसंधान द्वारा ही विकसित हो रहे हैं। वर्तमान अनुसंधान सुनियोजित रूप में, सुनिश्चित कार्य पद्धति के अनुसार विशेष उद्देश्यों की सिद्धि के लिए किए जाते है।

प्रत्येक क्षेत्र अनुसंधान से प्रभावित है। प्रतयेक नए व पुराने विषय अनुसंधान के प्रेरक हैं। प्रायोगिकता तथा सृजनात्मकता दोनों ही अनुसंधान की मूल आवश्यकता है जिसके बल पर शोध प्रक्रिया विकसित होती है। पीढ़ी-दर-पीढ़ी संचित ज्ञान भण्डार आगामी पीढ़ी को उपहार स्वरूप मिलता है जिसके बल पर शोध-कार्य आगे बढ़ता है।

शब्द कूंची

शोध स्वरूप, शोध अवधारणा, शोध प्रारंभ, अंर्तसंबंध

संदर्भ

[1]. "Research is systematized effort to gain new knowledge." - L.V. Redman and Others, The Romance of Research

[2]. "Research is an honest, exhaustive, intelligent searching for facts and their meanings or implications with reference to a given problem." - P.M. Cook

[3]. "Research is simply a systematic refined techniques of thinking, employing specialized tools, instruments and procedures in order to obtain a more adequate solution of a problem"- C.C. Crawford.

[4]. "Research is the manipulation of things, concepts or symbols for the purpose of generalizing to extand, correct or verify knowledge whether that knowledge aids in the practice or an art." (Encyclopedia of Social Sciences).

[5]. Educational Research is that activity which is directed towards development of a science of behaviour in educational situations." – M.M. Travers.

[6]. W.W. Monroe - "Research may be defined as a method of studying problems whose solutions are to be derived partly or wholly from facts. The facts dealt with in research may be statements of opinions, historical facts, records and reports, the results of tests, answers to questionnaires, experimental data of any sort and so forth."